इकाई 25 रिपोर्ताज़ : अदम्य जीवन

इकाई की रूपरेखा

25.0 उद्देश्य
25.1 प्रस्तावना
25.2 विधा के रूप में रिपोर्ताज
25.3 रिपोर्ताज की परंपरा
25.4 तूफानों के बीच : एक विहंगम दृष्टि
25.5 **अदम्य जीवन** : मूल संवेदना
25.6 **अदम्य जीवन** : शिल्पगत विशेषताएँ
25.7 **अदम्य जीवन** : मूल्यांकन
25.8 सारांश

25.0 उद्देश्य

एम.ए. हिंदी के बीज पाठ्यक्रम-4 'नाटक और अन्य गद्य विधाएँ' के छठे और अंतिम खंड की यह दूसरी इकाई है। पाठ्यक्रम की यह पच्चीसवीं इकाई हैं। इस इकाई में हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार स्व. रांगेय राघव द्वारा लिखित रिपोर्ताज **अदम्य जीवन** पर विचार किया गया है।

रिपोर्ताज यद्यपि पत्रकारिता से संबंधित विधा है लेकिन इसका एक रचनात्मक विधा के रूप में भी प्रयोग होता रहा है। इकाई में आप रिपोर्ताज की विशिष्टताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

हिंदी में रिपोर्ताज की विधा के आरंभ और विकास की जानकारी प्राप्त करके आप रांगेय राघव द्वारा लिखे गए रिपोर्ताजों की पृष्ठभूमि और विशेषताओं को समझ सकेंगे।

रांगेय राघव के रिपोर्ताज **अदम्य जीवन** की सामान्य विशेषताओं को समझना भी आवश्यक है, जिनकी चर्चा इकाई में की गई है और उसके बाद **अदम्य जीवन** की संवेदनागत और वस्तुगत तथा शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन किया गया है। इस प्रकार इकाई के अध्ययन से आपको रिपोर्ताज विधा और पठित रिपोर्ताज को समझने में मदद मिलेगी।

25.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एम.ए. (हिंदी) पाठ्यक्रम-4 के छठे खंड की दूसरी इकाई है। इस इकाई से पूर्व आप राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित यात्रा वृतांत **किन्नर देश की ओर** से संबंधित इकाई का अध्ययन कर चुके हैं। इस इकाई का संबंध रांगेय राघव के रिपोर्ताज **अदम्य जीवन** से है। इकाई के आरंभ में रिपोर्ताज विधा पर विचार किया गया है। रिपोर्ताज के स्वरूप निर्धारण में किन-किन तत्वों की क्या भूमिका रहती है और आलोचकों ने उनका मूल्यांकन किस रूप में किया है। इकाई में रिपोर्ताज की परंपरा का विकास भी दर्शाया गया है। इकाई के अगले भाग में रांगेय राघव की रिपोर्ताज पुस्तक 'तूफानों के बीच' पर विचार किया गया है। **अदम्य जीवन** इसी संग्रह में संकलित है। अतः पूरी कृति के संदर्भ में लेखक की रचना दृष्टि और उसके उद्देश्य आदि पर विचार किया गया है जो **अदम्य जीवन** के मूल्यांकन में हमारे लिए सहायक है। अगले भाग में **अदम्य जीवन** के संवदेनात्मक पक्ष पर विचार किया गया है। **अदम्य जीवन** में चित्रित यथार्थ, युगीन समस्याएँ तथा मानव की संघर्षशील जिजीविषा में लेखक की अटूट आस्था को रिपोर्ताज से उद्धृत विभिन्न पंक्तियों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

अदम्य जीवन की शिल्पगत विशेषताओं पर भी इकाई में विचार किया गया है। शिल्प की दृष्टि से इस रिपोर्ताज में क्या विशिष्ट है। परिवेश एवं भाषा का कैसा अनूठा प्रयोग यहाँ हुआ है। **अदम्य जीवन** में शिल्प के इसी वैशिष्ट्य को रेखांकित किया गया है। इस इकाई के अध्ययन से आपको उक्त रिपोर्ताज को समझने में मदद मिलेगी।

25.2 विधा के रूप में रिपोर्ताज

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल गद्य के विकास का काल है। इस युग में न केवल पारंपरिक गद्य विधाओं, जैसे कि - उपन्यास, कहानी, नाटक आदि का विकास हुआ बल्कि कुछ नवीन विधाओं का भी जन्म हुआ जिनमें जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज, यात्रा-वृतांत आदि प्रमुख हैं। जीवन और साहित्य के गहरे संबंधों से निःसृत रिपोर्ताज आधुनिक जीवन और साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। एक ओर इसका लेखक वैज्ञानिक युग की तीव्रगामी वास्तविकता के साक्षात्कार से आधुनिक व्यक्ति की जिज्ञासा वृत्ति को शांत करता है। दूसरी ओर जब वह मनुष्य और उसके दर्द से रिश्ता जोड़ता है तो सतही वास्तविकता और तथ्यपरकता का स्थान गहन अनुभूति ले लेती है। इसी अनुभूति के सहारे रचनाकार मानव मूल्यों और संबंधों की गहरी पड़ताल करता है। घटनात्मकता और अनुभूति के इसी समंजन से विकसित साहित्य रूप है - रिपोर्ताज।

रिपोर्ताज अंग्रेज़ी शब्द रिपोर्ट का समानार्थी फ्रांसीसी शब्द है जो इसी रूप में हिंदी में भी ग्रहण किया गया। 'रिपोर्ट' होने के नाते घटना का यथातथ्य वर्णन रिपोर्ताज का प्रमुख लक्षण है लेकिन जैसा कि समीक्षकों ने बल दिया और 'हिंदी साहित्य कोश' में इसे परिभाषित करते हुए लिखा गया :

'रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को ही रिपोर्ताज कहते हैं।'

तात्पर्य यह है कि रिपोर्ताज ऐसी 'रिपोर्ट' है जिसमें साहित्यिकता एवं कलात्मकता का समावेश हो। अब सवाल यह है कि ऐसे कौन से तत्व हैं जो एक रिपोर्ट को, घटना के वर्णन को श्रेष्ठ, कलात्मक, साहित्य रूप बनाते हैं? अधिकांश साहित्यकारों का मानना है कि रिपोर्ताज में भावना का आवेग होता है, वह आवेग जो मनुष्य के संघर्ष को देखकर जन्म लेता है।

अतः रिपोर्ताज के केंद्र में जो घटना या तथ्य रहता है उसका संबंध मनुष्य और उसके संघर्ष से होता है।

'रिपोर्ताज का स्वरूप' घटनापरक होते हुए भी सृजनात्मक एवं साहित्यिक है। घटना के यथातथ्य विवरण पर बल देते हुए भी यहां 'तथ्य' को तराशता और आकार देता है मानव सत्य। रिपोर्ताज में घटना का सतही रूप नहीं रहता, जो घट रहा है मात्र उतना ही सच नहीं है। घटना यहां एक 'संकुल प्रक्रिया' है (विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, जलते और उबलते प्रश्न, 233)। युग संघर्ष, युग चेतना, मनुष्य और उसका समाज, ह्रास-विकास की तमाम शक्तियाँ उसके भीतर सन्निहित रहती है।

रिपोर्ताज में जहाँ मानवीय संवेदनाएँ और मानवीय सरोकार इतने महत्वपूर्ण हैं वहीं लेखक के दृष्टिकोण का भी महत्वपूर्ण योगदान है। साहित्यकार अपने रचना कर्म का निर्वाह सजग युग द्रष्टा और युग स्रष्टा होकर करता है। घटना की सतह के भीतर देख पाने की रचनाकार की दृष्टि जितनी गहन होगी, उतनी ही उसकी रचना अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक होगी। वस्तुतः रिपोर्ताज में लेखक का दृष्टिकोण ही वस्तुगत सत्य को प्रभावी रूप प्रदान करता है। बाबू गुलाबराय ने इसे ही 'लेखक का उत्साह' कहा है। रिपोर्ताज के विषय में वे लिखते हैं :

'रिपोर्ट की भाँति यह घटना या घटनाओं का वर्णन तो अवश्य होता है किंतु उसमें लेखक के हृदय का निजी उत्साह रहता है जो वस्तुगत सत्य पर बिना किसी प्रकार का आवरण डाले उसको प्रभावमय बना देता है।' (काव्य के रूप)

यहाँ इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि लेखक का दृष्टिकोण इतना हावी नहीं होना चाहिए कि वह मूल कथ्य को ही आच्छादित कर ले। 'लेखक के उत्साह' की व्याख्या करते हुए समीक्षकों ने उसे लेखक की पक्षधरता का पर्याय माना है। डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के शब्दों में :

'.... परिप्रेक्ष्य के प्रति पक्षधरता अथवा प्रतिबद्धता के बिना रिपोर्ताज में लेखक का उत्साह व्यक्त नहीं हो सकता।' (जलते उबलते प्रश्न)

डॉ. रामविलास शर्मा भी मानते हैं कि 'कल्पना के सहारे रिपोर्ताज नहीं लिखा जा सकता ... रिपोर्ताज लिखने के लिए जनता से सच्चा प्रेम होना चाहिए।' (कथा विवेचना और गद्य शिल्प)

इस प्रकार रिपोर्ताज में लेखक अपने विचारों, भावों एवं अनुभूतियों के स्पर्श से घटना के वर्णन को प्रभविष्णुता प्रदान करता है।

रिपोर्ताज का संबंध वर्तमान से होता है। इसलिए कुछ समीक्षक तात्कालिकता को रिपोर्ताज का आवश्यक तत्व मानते हैं। पत्रकारिता से जुड़े होने के कारण रिपोर्ताज किसी भी घटना की तात्कालिक रिपोर्ट होती है या फिर किसी भी घटना पर लेखक की तीव्र भावात्मक प्रतिक्रिया। इसी संदर्भ में कहा जाता है कि रिपोर्ताज यथार्थ पर अवस्थित विधा है और यही तत्व उसे जीवंतता प्रदान करता है लेकिन इसका वर्तमान, भूत और भविष्य से कटा हुआ नहीं होता। डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के शब्दों में :

'उसका संबंध सिर्फ वर्तमान से होता है किंतु उसका लेखक वर्तमान के उस बिंदु पर होता है, जिसमें भूतकालीन मूल्य और भावनाएँ रहती हैं और भविष्य के प्रति उत्कट लालसा भी।' (जलते और उबलते प्रश्न)

इस प्रकार, रिपोर्ताज एक संश्लिष्ट विधा है जिसमें जीवन और इतिहास के अनेक धरातल किसी एक घटना, एक समय बिंदु पर केंद्रित होकर उसे उद्भासित करते हैं।

रिपोर्ताज के लेखक का उद्देश्य अपने वर्ण्य विषय को एक सजीव अनुभव के रूप में प्रस्तुत करना होता है। परिणामतः रिपोर्ताज का प्रस्तुतीकरण भी उसके लेखक से अतिरिक्त रचना सामर्थ्य की अपेक्षा रखता है। रिपोर्ताज में आँखों देखी घटना का वर्णन होता है लेकिन कभी-कभी जब कानों सुनी घटना पर रिपोर्ताज लिखा जाता है तब यह भी जरूरी होता है कि लेखक को घटना के इतिहास और परिवेश का प्रत्यक्ष अनुभव हो जिसके बल पर वह मनसा साक्षात्कार कर घटना को शब्द चित्र के रूप में सजीव कर दे। ... परिवेश के प्रति भी उसमें एक गहरा रागात्मक लगाव होता है। प्रामाणिकता के लिए वह स्थिति विशेष को उसकी स्थानगत व कालगत विशिष्टताओं के साथ उभारता है। उसका परिवेश चित्रण एक सहज आंतरिकता से संपन्न होता है। पूरे परिवेश को लेखक रचना के भीतर इस रूप में अनुस्यूत करता है कि रिपोर्ताज में रोचकता व सरसता के गुण स्वतः ही आ जाते हैं।

किसी भी रचना को सजीव बनाने में जीवंत भाषा की सक्रिय भूमिका रहती है। रिपोर्ताज घटनाओं का शब्द चित्र है। अतः उसकी भाषा सजीव, मर्मस्पर्शी एव संवेदना जागृत करने वाली होती है। शब्दों की विशिष्ट गति व वेग घटना का पूर्ण बिम्ब प्रस्तुत कर देते हैं। रिपोर्ताज की भाषा अपनी प्रवाह पूर्णता में घटना के अतीत को अनावृत करती, वर्तमान का साक्षात्कार

कराती और भविष्य की ओर संकेत करते हुए अनेक भंगिमाएँ धारण करती है तथा रचना की प्राणशक्ति बनकर पूरे अनुभव को सजीव एवं प्रत्यक्ष कर देती है।

सारतः कहा जा सकता है कि रिपोर्ताज आधुनिक हिंदी गद्य की एक नवीन विधा है। इसके केंद्र में 'घटना' का वह स्वरूप रहता है जो व्यापक मानवीय सत्य से जुड़कर चिरस्थायी साहित्य रूप में बदल जाता है। 'तथ्य' को 'सत्य' में परिवर्तित करने में लेखक के दृष्टिकोण का विशेष महत्व है। लेखक का दृष्टिकोण अतिवाद से परे लेखक की पक्षधरता का परिचायक है। वर्तमान पर केंद्रित होते हुए भी रिपोर्ताज घटना के इतिहास और उसके भविष्य-निर्देशों से जुड़ा रहता है। अपनी विशिष्ट रचना सामर्थ्य के बल पर रिपोर्ताज का लेखक अपने वर्णन और विवरणों में ऐसी प्रभाव क्षमता उत्पन्न करता हैं कि पूरी घटना एक जीवंत अनुभव में परिवर्तित हो जाती है।

25.3 रिपोर्ताज की परंपरा

विधा के रूप में 'रिपोर्ताज' का विकास द्वितीय विश्वयुद्ध से संबद्ध है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय साहित्यकारों ने युद्धक्षेत्रों से महायुद्ध की विभीषिका का ऐसा जीवंत वर्णन प्रस्तुत किया कि पूर्व प्रचलित 'रिपोर्ट' की विधागत सीमाओं को तोड़कर 'रिपोर्ताज' नामक साहित्यिक विधा का जन्म हुआ। इन लेखकों ने एक ओर, मनुष्य की मानवीयता को झकझोरा तो दूसरी ओर राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अपने देश के साहसी योद्धाओं के पराक्रम एवं बलिदान का आँखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया।

हिंदी में रिपोर्ताज की परंपरा का प्रारंभ दिसम्बर 1938 में 'रूपाभ' में प्रकाशित शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा' से माना जाता है। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का नाम भी उल्लेखनीय है। वे बहुत पहले से रिपोर्ताज लिख रहे थे जिनका संकलन 1953 में 'क्षण बोले कण मुस्काए' नाम से प्रकाशित हुआ। वस्तुतः इस विधा का महत्व समझकर उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करने का श्रेय श्री शिवदानसिंह चौहान को ही है। 'हंस' पत्रिका के तत्कालीन संपादक के रूप में उन्होंने 'अपना देश' नामक स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया जिसमें प्रतिमास एक रिपोर्ताज प्रकाशित होता था। शिवदान सिंह चौहान द्वारा रचित रिपोर्ताज 'मौत के खिलाफ़ जिंदगी की लड़ाई' - इस स्तंभ की पहली कड़ी के रूप में प्रकाशित हुआ है। 'हंस' पत्रिका में ही 'समाचार और विचार' नाम से एक और स्तंभ निकलता था, इसमें प्रस्तुत सामग्री भी रिपोर्ताज की ही होती थी।

1944 में ही 'विशाल भारत' में रांगेय राघव ने बंगाल के अकाल पर **अदम्य जीवन** शीर्षक से स्थायी महत्व के रिपोर्ताज लिखे जो बाद में 'तूफानों की बीच' नाम से संकलित किए गए। इस युग में प्रकाशचन्द्र गुप्त तथा अमृतराय आदि लेखक भी इस विधा में सक्रिय योगदान दे रहे थे लेकिन इस क्षेत्र में रांगेय राघव की अद्वितीयता तथा 'तूफानों के बीच' के ऐतिहासिक महत्व को स्वीकार करते हुए अमृतराय ने लिखा :

"जहाँ तक मैं जानता हूँ रांगेय राघव के उन्हीं रिपोर्ताजों से हिंदी में रिपोर्ताज लिखने का चलन शुरू हुआ। मैंने और दूसरों ने रिपोर्ताज लिखे, लेकिन जो बात रांगेय राघव के लिखने में थी वह किसी को नसीब न हुई।" (रांगेय राघव का रचना संसार)

स्वातंत्र्योत्तर युग में इस विधा की ओर और भी लेखकों का रूझान हुआ। रामकुमार वर्मा कृत 'यूरोप के स्केच' में संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज के मिले जुले तत्व दिखाई पड़ते हैं। लक्ष्मीचंद्र जैन के रिपोर्ताज संग्रहों - 'कांगज की किश्तियाँ' तथा 'नये रंग नये ढंग' में दृष्टि की सूक्ष्मता तथा गहरे अध्ययन की पृष्ठभूमि दिखाई पड़ती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की स्थितियों पर अमृतराय ने 'हंस' में जो रिपोर्ताज लिखे वे सब 'लाल धरती' शीर्षक से संकलित हुए।

युद्ध की पृष्ठभूमि पर बहुत से रिपोर्ताज लिखे गए। 1966 में भारत-पाकिस्तान युद्ध की आधारभूमि पर शिवसागर मिश्र ने 'लड़ेंगे हजार साल' शीर्षक से रिपोर्ताज लिखे। धर्मयुग पत्रिका में 1972 में धर्मवीर भारती के रिपोर्ताज 'ब्रह्मपुत्र की मोर्चाबंदी' और 'दानव की वृत्ति' नाम से आए, जो बाद में 'युद्ध क्षेत्रे मुक्त क्षेत्रे' शीर्षक से प्रकाशित हुए।

फणीश्वरनाथ रेणु के निबंध संग्रह 'श्रुत अश्रुत पूर्व' में 'एकलव्य के नोट्स' तथा 'नेपाल मेरीसानोआमा' नामक रिपोर्ताज संग्रहीत है। रेणु के अन्य प्रमुख रिपोर्ताज संग्रह हैं - 'ऋणजल धनजल', 'नेपाली क्रांतिकथा'। रेणु के रिपोर्ताजों में भावना की दुनिया का एक नया संदर्भ है, जिसमें अनेक क्रांतिकथाएँ उभर कर आई हैं।

स्वातंत्र्योत्तर भारत के गाँवों के दुःख दर्द की अभिव्यक्ति है विवेकीराय के रिपोर्ताज : 'जुलुस रूका है'। मणि मधुकर के रिपोर्ताज संग्रह 'पिछला पहाड़ा' तथा 'सूखे सरोवर का भूगोल' रेगिस्तान के जीवन से संबद्ध हैं। इनमें मरुभूमि के जीवन संघर्षों को लेखक ने मानवीय सहानुभूति के साथ उभारा है। अज्ञेय के संग्रह 'देश की मिट्टी बुलाती है' में भी कुछ श्रेष्ठ रिपोर्ताज संकलित हैं जिनमं 'जापानी युद्धबंदियों के साथ' का स्थायी महत्व है।

इस प्रकार रिपोर्ताज विधा को विकसित करने में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा साहित्यकारों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। इन्हीं के सतत प्रयासों से रिपोर्ताज अपने वैशिष्ट्य को स्थापित करते हुए, एक साहित्य विधा के रूप में अपनी अलग पहचान बना सका है।

25.4 तूफानों के बीच : एक विहंगम दृष्टि

हिंदी रिपोर्ताज साहित्य में रांगेय राघव की रचना 'तूफानों के बीच' का स्थायी महत्व है। रिपोर्ताज विधा की दृष्टि से हिंदी में यह पहला सशक्त प्रयास है। आलोचकों ने भी इसके मौलिक व अविस्मरणीय योगदान को स्वीकार किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1942 में भयंकर अकाल पड़ा। बंगाल की शस्य श्यामला भूमि - भूख, रोग और मृत्यु के संत्रास से कराह उठी लेकिन यह अकाल प्राकृतिक विपदा भर नहीं था, साम्राज्यवादी ताकतों की शोषणपरक नीतियों का परिणाम था। 'तूफानों के बीच ' की भूमिका में रांगेय राघव लिखते हैं :

"बंगाल का अकाल मानवता के इतिहास का बहुत बड़ा कलंक है। शायद क्लियापैट्रा भी धन के वैभव और साम्राज्य की लिप्सा में अपने गुलामों को इतना भीषण दुःख नहीं दे सकी जितना आज एक साम्राज्य और अपने ही देश के पूंजीवाद ने बंगाल के करोडों आदमी, औरतों और बच्चों को भूखा मार कर दिया है।" (रांगेय राघव ग्रंथावली, भाग-8)

बंगाल के इस भीषण अकाल से लड़ने के लिए अपना कर्त्तव्य समझकर डॉ. कुंटे के नेतृत्व में एक मेडिकल जत्था आगरा से बंगाल गया। डॉ. रांगेय राघव एक लेखक के रूप में इस जत्थे के साथ गए। वहां लेखक ने जो कुछ देखा उसी का मार्मिक विवरण है - 'तूफानों के बीच'।

रांगेय राघव जनचेतना के सजग रचनाकार हैं। मनुष्य और उसका मनुष्यत्व उनके चिंतन के केंद्र में है। मानवीय मूल्यों के पक्षधर लेखक के रूप में मनुष्य की सार्थकता उसके समाज-संवेद्य होने में ही मानते हैं। इसी विचारधारा को प्रमाणित करने वाली कृति है 'तूफानों के बीच।' बंगाल का अकाल लेखक के लिए मात्र घटना और आंकड़ों तक सीमित नहीं था। उसने उन लोगों के साथ उस विभीषिका के संत्रास और पीड़ा को झेला था। वह द्रष्टा भी था और भोक्ता भी। उनकी पीड़ा का अनुभव करते हुए उसने लिखा - "उनके चेहरों पर जैसे दुख की खुली किताब थी जो भी इंसानियत का थोड़ा बहुत मादा रखता है वह आसानी से पढ़ सकता है उसको।" रांगेय राघव में निश्चय ही वह 'इंसानियत' थी। 'तूफानों के बीच' के रचनाकार में

वह अनुभूति है जो भूख की पीड़ा का अनुभव कर सकती है। उनमें वह वेदना है जो जीवन को देखने की एक नई दृष्टि देती है। उनमें वह विवेक है जो भूख, रोग और मृत्यु के बीच ऐसा शब्द चित्र खींचता है जो करूणा एवं यथार्थ का जीवंत दस्तावेज़ बन गया है।

'तूफानों के बीच' अकाल के उस यथार्थ का रूप प्रस्तुत करता है जहाँ मनुष्य के जीवन का एकमात्र लक्ष्य मुट्ठी-भर अनाज है। उसके समक्ष सब कुछ असंगत हो जाता है - रागात्मक संबंध, नैतिक मान्यताएँ, मानवीय मूल्य। अस्तित्व का संकट सबसे बड़ा संकट दिखाई पड़ता है। विपत्ति और निराशा के घने कुहरे से घिरकर भी मनुष्य का साहस अपराजेय है। वह संघर्ष करता है क्योंकि मानवता जीवित रहना चाहती है।

रांगेय राघव बंगाल के अकाल को भारतीय स्वाधीनता से जोड़कर देखते हैं। उनके अनुसार :
'बंगाल की भुखमरी तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक हमारा देश आजाद नहीं हो जाएगा और मेरा विश्वास है कि इस भूख के विरुद्ध लड़कर जनता ने अपनी महान शक्ति का परिचय दिया है, जिससे हमें एक नया साहस भरकर हुंकार उठना चाहिए।'

लेखक ने पराधीनता और जनशक्ति को अपने युग की दो बड़ी सच्चाइयों के रूप में पहचाना है। लेखक का आक्रोश अंग्रेज़ी शासन और उसके संरक्षण में पल्लवित होते पूंजीपतियो के विरुद्ध है जिन्होंने व्यापक जनहित की उपेक्षा करते हुए चोर-बाज़ारी और मुनाफाखोरी को प्रश्रय दिया। बंगाल का व्यापक नर-संहार अंग्रेज़ी-शासन और ऐसे ही व्यापारियों की दुरभिसंधि का परिणाम था लेकिन क्रांति को चिरजीवी रखने के आकांक्षी जनमानस ने हार नहीं मानी। यदि एक ओर वे नर-पिशाच थे जो मनुष्य को मरते देखकर भी चुप थे। रुपये की खन-खन में जो अपनी सारी सभ्यता और सारा मनुष्यत्व भूलकर राक्षसी आंख तरेरा करते थे तो दूसरी ओर ऐसे लोगों की संख्या भी कम न थी जो मनुष्य को मरने देना नहीं चाहते थे। एक विज्ञ लेखक की भांति रांगेय राघव संपूर्ण परिप्रेक्ष्य को परत-दर-परत उघाड़ते चलते हैं। उनकी गहरी अंतर्दृष्टि इतिहास, परंपरा, समाज, व्यक्ति और मानवता सबको एकसूत्र में पिरोकर इस दुर्भिक्ष की विभीषिका के विरुद्ध मानवीय सामर्थ्य को शब्दबद्ध करती है। उनके एक-एक शब्द में लेखक की सच्चाई और ईमानदारी झलकती है। जनता की अपराजेय शक्ति में उनकी अटूट निष्ठा एक नया विश्वास उत्पन्न करती है।

कुल मिलाकर 'तूफानों के बीच' रांगेय राघव का एक सफल एवं सार्थक प्रयास है जिसमें लेखक ने अकाल की विभीषिका को शब्दबद्ध किया है। अंग्रेज़ों और पूंजीपतियों के गठजोड़ को उसके लिए उत्तरदायी माना है। अकाल के परिणामस्वरूप विभिन्न समस्याओं से जूझते मनुष्य की संघर्षशील जिजीविषा से साक्षात्कार किया है।

25.5 अदम्य जीवन : मूल संवेदना

'तूफानों के बीच' में संकलित रिपोर्ताज **अदम्य जीवन** शिद्धिरगंज नामक गाँव पर केंद्रित है। शिद्धिरगंज के माध्यम से यह बंगाल के दारुण यथार्थ का साक्षात्कार है।

रांगेय राघव की मानवतावादी जीवन-दृष्टि से अनुप्राणित **अदम्य जीवन**, 'तूफानों के बीच' का प्रतिनिधि रिपोर्ताज कहा जा सकता है। यह कृति की मूल संवेदना का वाहक रिपोर्ताज है। बंगाल का अकाल, अकाल के कारण तथा अकाल जन्य स्थितियों का मार्मिक चित्रांकन - यहाँ अपनी समग्रता में उपस्थित है। भूख, रोग और मृत्यु का साम्राज्य और उनसे जूझता मनुष्य स्थितियों की प्रतिकूलता के बावजूद मनुष्य की संघर्षमय चेतना ही सत्य है। लेखक उसी का गुणगान व अभिनंदन करता है।

अदम्य जीवन में चित्रित यथार्थ भयावह है। 'मृत्यु' इस यथार्थ का सबसे बड़ा सच है। गाँव की सीमा शुरू होने से पूर्व कब्रें शुरू हो जाती हैं :
'फोड़ों की तरह वे कब्रें जगह-जगह सूजी हुई सी दिखाई दे रही थीं।'

एक-एक कब्र में दो-दो, तीन-तीन लाशें एक साथ दफनाई गई। हर घर में मौत हुई थी। तीस-चालीस लोग प्रतिदिन मृत्यु की भेंट चढ़ जाते। आंकड़े भयावह थे। रहम्त के घर में पच्चीस आदमी थे और उनमें से बीस मर गए थे, आदू मियाँ के घर में उन्नीस आदमी थे और सब मर गए थे, एक मां के छः बच्चे अनाज और दवा के अभाव में उसकी आँखों के सामने चल बसे, अब्दुर्रहमान के घर में सोलह आदमी थे और उनकी मृत्यु की त्रासदी झेलने को वह अकेला बचा था। इस पर भी, किसी का रोना-कराहना शेष नहीं बचा। जीवन के अभावों से जूझते आँखों की नमी सूख गई है। लेखक से उन्हें बस यही अपेक्षा है कि वह एक-एक कब्र से बात करे और जुलाहों के चूहों की तरह मरने की व्यथा-कथा सारे संसार को सुनाये।

रांगेय राघव जैसे रचनाकार के लिए भी यह स्थिति मात्र घटना के विवरण तक ही सीमित नहीं रही है वरन् उनकी मानवीय चेतना मनुष्य को मृत्यु के सत्रांस से इस तरह संघर्ष करता देख अत्यंत विफल हो गई :

'....आँखों के सामने एक बारगी उनमें सोए कंकाल तड़प उठे और नाच उठे यातना से व्याकुल, भूख से तड़प-तड़पकर मरते हुए प्राणियों के चित्र।'

एक तरफ मृत्यु का यह आतंकपूर्ण रूप है तो दूसरी और बीमारियों की भीषण यंत्रणा ने अकाल की स्थिति को और भी दुस्सह बना दिया। मलेरिया, चेचक और चर्म रोग जैसी बीमारियों से जूझने के उनके पास कोई साधन नहीं है। सहायता के नाम पर एक सरकारी दवाखाना अवश्य था, न तो कोई दवाइयाँ थीं, न मरीजों की खास तवज्जह और इस पर भी शासकीय मत की पुष्टि करता असिस्टेंट डाक्टर 75 फ़ीसदी आदमियों की हालत सुधारने का दावा करता है। जबकि रोग से ज़र्जर प्रतीक्षारत रोगी, उनकी बुझी आँखें, उभरी पसलियाँ और भयानक चर्म-रोग एक अलग कहानी कहते हैं। स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा भेजी गई सहायता भी अत्यंत अपर्याप्त थी। डॉ. कूंटे के नेतृत्व में गया एक मेडिकल जत्था और फ्रेण्ड्स एम्बुलेंस यूनिट द्वारा चलाया जा रहा एक लंगरखाना जहाँ सौ बच्चों में मात्र साढ़े सात सेर खिचड़ी बंटती थी।

सब ओर, अभाव और अभावजन्य भ्रष्टाचार का बोलबाला है। चावल किसी भी दाम नहीं मिलता। हर चीज़ पर मुनाफाखोरी और चोरबाज़ारी हो रही है। अधिकांश लोग एक वक्त खाकर ही जीवित रह रहे हैं। तीन-साढ़े तीन सौ लोग गाँव छोड़कर भाग गए। आम आदमी के लिए स्थिति और भी भयंकर हो जाती है। व्यवस्था पर से उसका विश्वास उठ गया - 'गाँव-कमेटी के, यूनियन-बोर्ड के मेम्बर सब चोर हैं, चोर! कोई हमारी परवाह करता है? रिश्तेदारों को कारड देते हैं, अपनों को देते हैं, हमारी क्या पूछ...?'

बंगाल के इस भयानक अकाल ने जनमानस को झकझोर कर रख दिया। संकट की घड़ी में मनुष्य के भीतर छिपे पिशाच उजागर हुए। व्यक्ति के स्वार्थ और 'निज', 'पर' की परिभाषाओं ने मानवता के अंतःसूत्र को एक झटके में तोड़ डाला। एक होकर व्यक्ति बड़ी से बड़ी ताकत से लड़ सकता है लेकिन एकता का अभाव उसे यूं मरने के लिए छोड़ देता है। आत्मविश्लेषण के क्षणों में बंगाल के निवासियों ने भी यह अनुभव किया कि अकालजन्य स्थितियों में मानव की ऐसी दुर्दशा का बहुत बड़ा कारण एकता का न होना ही है - 'हममें एका नहीं है, वर्ना क्या मजाल कि वह अपनी मनमानी करें।'

व्यक्ति का संकुचित स्वार्थ उसे अपने-अपने घेरे में बांधे रहा और पेट की आग ने समस्त मूल्यों ओर नैतिकताओं को खोखला कर दिया। भूख की भीषणता के आगे समस्त रागात्मक संबंध

सूख जाते हैं। मानवीय भावनाएँ कठोर हो जाती हैं। कब्रों के ढेर में एक बच्चा केवल अपने बाप की कब्र पहचानता है यह बहुत बड़ी बात है। नहीं तो सब कब्रों पर पैर रख खड़े हो जाते, कितनी लाशें बिना कफ़न के दफनाई गई। जहां जीवित के सम्मान की रक्षा के साधन पर्याप्त न थे वहाँ मृत लाशों का सम्मान कोई कैसे रखता। ऐसे समाज में औरत की अस्मत की उसके अस्तित्व से अधिक मूल्यवत्ता नहीं थी। सब लड़ रहे थे किसी तरह अपना जीवन बचाने को, ऐसे में नैतिकता के मानदंडों का ठहर पाना कठिन हो गया। शिद्धिरगंज की औरतों को यदि अपनी इज्जत बेचने पर उतारू होना पड़ा तो इसमें कितनी बुराई थी नहीं कहा जा सकता। 'कुछ कहते हैं कि जैसे इतने मरे, वे भी मर जातीं, तो हर्ज ही क्या था? पर मैं सोचता हूँ, मर जाना क्या सहज है? कोई क्या अपने आप मर जाना चाहता है?' यथार्थ के इस भयानक सच से लेखक सीधे साक्षात्कार करता है। इस आमनवीय यथार्थ की नग्नता को वह किसी आदर्श मूल्य की आड़ से ढंकना नहीं चाहते, बल्कि समस्त सामाजिक विसंगत मूल्यों के यथार्थ चित्रण द्वारा मानवीय संवेदना को झकझोर कर नवीन आर्थिक, सामाजिक मूल्य चिंतन की दिशा संधान के लिए प्रेरित करते हैं।

इस अकाल को मानव निर्मित ठहराते हुए लेखक उस व्यवस्था पर प्रश्न-चिह्न लगाता है जो साधनों को कुछ हाथों में केंद्रित करके व्यापक जन समुदाय को इस भीषण संघर्ष की ओर ढकेल देती है। जहाँ वस्तु व्यक्ति के लिए न होकर पैसे क लिए हो जाती है। बंगाल के इस अकाल में भी पूंजीपति पैसे से सब कुछ नापता रहा और मनुष्य की भूख और नग्नता ने उसे सर्वनाश के कगार पर ला खड़ा किया - '...मनुष्य को नंगा रखकर मनुष्य ने अपने मुनाफों के लिए बेशुमार कपड़ा तालों में बंद कर रखा , जहाँ वस्तु मनुष्य के लिए न होकर पैसे के लिए थी। कितना बड़ा व्यंग्य और विद्रूप था यह कि आज कपड़ा बनाने वाले स्वयं नंगे थे।'

अदम्य जीवन केवल इस स्थिति का ब्यौरा भर नहीं है। जनता के प्रति लेखक की सच्ची सहानुभूति, संवेदनशील दृष्टि और व्यापक जनसमुदाय के प्रति उसकी पक्षधरता इस रिपोर्ताज को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था के विरूद्ध एक सक्रिय हस्तक्षेप का रूप देती है। व्यक्ति के संकुचित स्वार्थ पर टिकी इस व्यवस्था के विरूद्ध लेखक उस स्वार्थ की परिकल्पना करता है जो सबका स्वार्थ हो, जिसमें सबका सुख और सबका हित निहित हो। चारों और व्याप्त अकाल के संत्रास से पीड़ित मनुष्य की वेदना में रांगेय राघव को एक नई जीवन-दृष्टि प्राप्त हुई है। भूख, रोग और मृत्यु के बावजूद भी लेखक का विश्वास है कि बंगाल मर नहीं सकता - 'जहाँ भूख और बीमारियों से लड़कर भी मनुष्य के बालकों में क्रांति को चिरजीवी रखने का अपराजित साहस है, वह राष्ट्र कभी नहीं मर सकेगा।'

मानव की मानवीयता में लेखक की आस्था अटूट है। दुःख और अत्याचार के भीतर लेखक ने मनुष्यता की अजस्र धारा को संचरित होते देखा है। भूख के विरूद्ध लड़ती जनता की शक्ति और साहस का अनुभव किया है। विपरीत परिस्थितियों में यदि कुछ सच है तो केवल बंगाल के बच्चों की अदम्य जिजीविषा, जिसे देखकर लेखक मानों घोषणा करता है :

'युग-युग तक संसार को याद रखना पड़ेगा कि एक दिन मनुष्य के स्वार्थ और असाम्य के कारण, गुलामी और साम्राज्यवादी शासन के कारण, बंगाल जैसी शस्य श्यामला भूमि में मनुष्य को भूख से दम तोड़ना पड़ा था? और लोगों ने उसे पूरी शक्ति से इसलिए झेला था कि मानवता जीवित रहना चाहती थी। उसे कोई मिटा नहीं सकता।'

निष्कर्षतः **अदम्य जीवन** युग की उन समस्याओं की अभिव्यक्ति है जो प्रत्यक्षतः अकाल का परिणाम देखती है लेकिन वस्तुतः वह अंग्रेज़ों के साम्राज्यवादी शासन, पूंजीवाद और व्यक्ति के स्वार्थ का परिणाम है। यहाँ जीवन का वह रूप है जिसमे जिंदगी को 'सही-गलत' के सरलीकृत कटघरों में रखकर नहीं देखा जा सकता। भूख और मृत्यु की भीषण यंत्रणा के सम्मुख मानव मूल्यों व नैतिक धारणाओं की पहचान धुंधला जाती है। लेखक का आक्रोश उस

व्यवस्था के प्रति है जो मनुष्य को इस अंध गह्वर की ओर ढकेल रही है और उसकी पक्षधरता मनुष्य के उस रूप के साथ है जहाँ मानवता के जयघोष के लिए मानव संतान क्रांति के चिरजीवी होने का आकांक्षी है।

25.6 अदम्य जीवन : शिल्पगत विशेषताएँ

रिपोर्ताज में लेखक जिस उत्साह से अपने युग-सत्य का साक्षात्कार करता है उससे प्रायः उसका कथ्य शिल्प की अपेक्षा प्रधान रहता है किंतु यह भी सच है कि घटना के जीवंत स्रोतों से पूरी ईमानदारी और साहस से जुड़ने के कारण उसके शिल्प में भी गुणवत्ता और ताज़गी आ जाती है। जिस प्रकार रिपोर्ताज का कथ्य बहुमुखी होता है उसी प्रकार इसके शिल्प में भी अभिव्यक्ति की उन्मुक्तता रहती है। कहीं इसकी शैली वर्णनात्मक होती है, कहीं विवरणात्मक कहीं पत्र या डायरी की। रिपोर्ताज का लेखक, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा-वृतांत आदि अन्य गद्य विधाओं के तत्वों का भी प्रयोग करता है। कथ्य, चरित्र, संवाद आदि सभी तत्व रिपोर्ताज के रचनात्मक गठन में महत्वपूर्ण उपकरण बनकर आते हैं। **अदम्य जीवन** इन सभी शिल्पगत विशेषताओं को आत्मसात कर लिखा गया एक प्रौढ़ रिपोर्ताज है। इसका शिल्प भी इसके कथ्य की ही भांति महत्वपूर्ण है। वस्तुतः इसमें कथ्य और शिल्प की प्रौढ़ता के कारण ही उद्देश्य एवं प्रभाव की एकरूपता परिलक्षित होती है।

अदम्य जीवन में रांगेय राघव ने परिवेश का अत्यंत सृजनात्मक प्रयोग किया है। पूरी रचना में परिवेश प्राणदायक स्पंदन की तरह व्याप्त है। कहीं प्रकृति के माध्यम से तो कहीं व्यक्ति और परिस्थिति के परस्पर संघात से उभरते सजीव चित्रों में बंगाल का इतिहास और परंपरा मानों जीवित हो उठे हैं। रिपोर्ताज का प्रारंभ बंगाल की एक सुंदर सुबह के वर्णन से होता है :

'हम पगडंडियों में बढ़ते जा रहे थे। सूर्य आकाश में चढ़ने लगा था। ... आकाश में बादल तैर रहे थे, जिन्हे देखकर खेतों से एक सोंधी-सी उसांस उमंग उठती थी। दूर हरियाली की हहर तेज चलती हवा की तरंगों पर गूंज-सी उठती थी। हरी-भरी पृथ्वी पर कभी-कभी बादलों के छा जाने से कहीं धूप और कहीं छाया, बरबस हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थीं।'

बंगाल की शस्य श्यामला मनोहारी भूमि और मनुष्य के शोषण का प्रतीक वह भयंकर अकाल मानो प्रकृति भी मनुष्य के दर्द की भागीदार बन गई हो - 'वर्षों से ताड़ का वह पेड़ इसी तरह खड़ा है और वर्षों से उसके हिलते पत्तों ने बादलों की मर्मर सुनी है किंतु आज उसकी छाया में मनुष्य विक्षुब्ध हैं।'

रिपोर्ताज विधा के अनुरूप यहाँ कोई कथा नहीं है लेकिन घटनाएँ है और उन घटनाओं को संगठित करन वाले तत्व के रूप में परिवेश की अपनी विशिष्ट भूमिका है। बंगाल की धरती, प्रकृति, मनुष्य और उसकी संघर्षशील जिजीविषा रिपोर्ताज के एक-एक शब्द में दिखाई पड़ते हैं।

चित्रात्मक भाषा का प्रयोग इस रिपोर्ताज की सबसे बड़ी शक्ति है। रिपोर्ताज के लिए कहा जाता है कि उसमें क्रिया का सौंदर्य होता है। उसकी भाषा में त्वरा होती है। वस्तुतः लेखक का उद्देश्य ही उसकी भाषा में इन गुणों की सृष्टि करना है। यहाँ भी रांगेय राघव भूख, रोग और मृत्यु से जूझते बंगाल के लोगों की व्यथा-कथा सुनाकर साम्राज्यवादी शासन और पूंजीपतियों की दुरभिसंधि को उद्घाटित करना चाहते हैं। उनके हृदय का आवेग और पीड़ा रिपोर्ताज के प्रत्येक शब्द में बोलती सुनाई पड़ती है। यहाँ भाषा का सायास प्रयोग नहीं है। सामान्य जनजीवन की भाषा का प्रयोग करते हुए भी लेखक ने उसे अपूर्व अर्थ क्षमता प्रदान की है।

'खेतों में कब्रें चुपचाप उदास-सी सोई पड़ी थी, जिन्हें चिथड़ों में लिपटा एक बुड्ढ़ा एक पेड़ की छाया में बैठा विरक्त भाव से देख रहा था। एक टूटी-सी दीवार में तीन आले अब भी खड़े थे, मगर घर नहीं थे। आठों घर विध्वस्त पड़े थे। उनके सामने बराबर-बराबर में तीस कब्रें पड़ी थीं और एक नवयुवक, जो देखने में बूढ़ा लगता था, उनकी और देख-देखकर मुस्करा रहा था। वे सब एक दिन जुलाहों के घर थे, पर अकाल के ताने और बीमारियों के बाने ने सहसा उनके जीवन-व्यापार का अंत कर दिया था।'

कहीं-कहीं लेखक ने ऐसी उपमाओं का प्रयोग किया है जो उस त्रासदी को साकार करने में सक्षम है। जेसे यहां - 'अकाल के ताने और बीमारियों के बाने ने' या फिर 'जुलाहे चूहों की तरह मर रहे हैं' आदि। लेखक का कल्पना विधान जीवन के कटुतम यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए ऐसे सादृश्य उपस्थित करता है जो पाठक को झकझोर देने के साथ ही भाषा को ऊर्जा प्रदान करते हैं - 'सामने भट्टी में से धुआं निकलकर ऊपर घुमड़ रहा था। आज सारा बंगाल महानाश की आग पर लटका भुन रहा है और चारों और से राक्षस मानों उसे चबा जाना चाहते हैं।'

अलग-अलग स्थलों पर भाषा भिन्न-भिन्न रूप धारण करती है। कहीं उसमें इतना आवेग है तो कहीं एक निमर्म तटस्थता। व्यवस्था के विद्रूप को उद्घाटित करने में तल्खी और व्यंग्य इस भाषा के महत्वपूर्ण उपकरण हैं। लेखक की आंतरिक बेचैनी पूरे रिपोर्ताज में गत्यात्मकता व नाटकीयता का विशिष्ट समंजन करती है। लेखक के पास कहने को बहुत कुछ है। उसके आस-पास दर्द से भरे अनेक चेहरे हैं जिन्हें वह अपनी रचना में साक्षात् कर देना चाहता है। यह बेचैनी उसके कथ्य को गति देती है। सतह के भीतर की विसंगति को उद्घाटित करने के लिए लेखक ने नाटकीय शैली का प्रयोग किया है :

'एक औरत जो पास में खड़ी थी, कहने लगी, तुम डॉक्टर हो? पहले क्यों नहीं आए? जाने कितने जानें बच जातीं।...'

उस समय उस औरत की बात की अनसुनी करके खैराती अस्पताल का एसिस्टेंट डाक्टर मुझसे कह रहा था - हमने 75 फ़ीसदी आदमियों की हालत सुधार दी है...। .. एक ओर हमारे शासक बोल रहे थे, दूसरी ओर वही बात जनता कह रही थी। सामने अनेक जर्जर रोगी खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे बुझी हुई आँखें, उभरी हुई पसलियाँ और वही भयानक चर्म-रोग।'

घटना के ब्यौरों के बीच में लेखक ने जीते जागते पात्र खड़े कर दिए हैं और उनकी वेदना की अभिव्यक्ति होती है - छोटे-छोटे वाक्यों और अधूरे छूटे संवादों में।

'अब यही दो-चार घर रहे गए हैं, और कुछ दिन बाद शायद ...।'

x x x x

'वह सामने एक भद्रलोक का घर था। उसे भी टीन बेच देनी पड़ी, क्योंकि .....'

x x x x

'मैं अब यहीं लंगर खाने में काम करती हूँ, किसी तरह पेट भर जाता है। भीख नहीं मांगी जाती, बाबू....।'

ये अधूरे संवाद अधूरे होकर भी सार्थक हैं। पूरी कार्य-कारण श्रृंखला को अनावृत करने में इनका योगदान है। ये रचना को अधिक प्रामाणिक एवं विश्वसनीय बनाते हैं।

कुल मिलाकर, इस रिपोर्ताज की भाषा अर्थ गांभीर्य से युक्त, अनेक अर्थ स्तरों को उद्घाटित करने वाली प्राणवान और जीवंत भाषा है। जीवन के यथार्थ से तराशी गई इस भाषा के शब्दों में धार है। वाक्य गठन, शब्द-चयन एवं शैली विन्यास सभी दृष्टियों से अदम्य जीवन में

रिपोर्ताज का शिल्प अपने पूर्ण उत्कर्ष पर दिखाई देता है। विशेषतः उन स्थलों का अक्षुण्ण महत्व है जहाँ लेखक मनुष्य के साहस और मानवता में अपनी आस्था प्रकट करता है। उसके ओजपूर्ण उद्‌गारों में उसकी आत्मा बोलती है।

इस प्रकार, अपने कथ्य के प्रस्तुतीकरण में रांगेय राघव की प्रौढ़ रचनाशीलता के दर्शन होते हैं। रिपोर्ताज के शिल्प को सप्राण बनाने के लिए उन्होंने परिवेश का विशेष उपयोग किया है। प्रकृति के अनेक बिंब मनुष्य की पीड़ा के साक्षी बनकर आए हैं। शब्द, चयन एवं वाक्य गठन की दृष्टि से उनकी भाषा में उनके विचारों को वहन करने की अपूर्व क्षमता है। जन-जीवन से जुड़ी भाषा को लेखक का सादृश्य विधान नई ऊर्जा व गति देता है।

25.7 अदम्य जीवन : मूल्यांकन

विधा के विकास की दृष्टि से यह युग रिपोर्ताज के विकास का दौर है। कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, शिवदान सिंह चौहान से लेकर रांगेय राघव, प्रकाशचंद्र गुप्त, अमृतराय, फणीश्वरनाथ रेणु, निर्मल वर्मा, धर्मवीर भारती आदि साहित्यकारों ने इस विधा के विकास में अपना अमूल्य योगदान किया है। विषयवस्तु की विविधता तथा प्रस्तुतीकरण में व्यक्तित्व की निजता के समावेश ने प्रत्येक रिपोर्ताज को विशिष्ट बना दिया है। सबका अपना-अपना रंग है। इसलिए सबको एक धरातल पर स्थित कर तुलनात्मक दृष्टि से उनका अध्ययन न तो संभव है,न ही वांछनीय। जहाँ तक रांगेय राघव के रिपोर्ताजों का प्रश्न है तो उनमें अवश्य ही समानता दिखाई पड़ती है। अधिकांश रिपोर्ताज बंगाल के अकाल पर लिखे गए हैं। एक रिपोर्ताज ग्वालियर मिल में मज़दूरों पर गोली चलाने की घटना को लेकर भी है। 'यह ग्वालियर है' शीर्षक से यह रिपोर्ताज ग्रंथावली के आठवें भाग में संकलित है। रांगेय राघव के रिपोर्ताज की विशिष्टता यह है कि उन सभी में लेखक की मानवतावादी दृष्टि एवं साम्यवादी चेतना के दर्शन होते हैं। उनके रिपोर्ताजों पर टिप्पणी करते हुए डॉ. मधुरेश ने लिखा है - 'चाहे बांगल के अकाल से संबंधित रिपोर्ताज हो या ग्वालियर में मज़दूरों पर हुए गोलीकाण्ड से, रांगेय राघव सब कहीं जनता की साम्राज्य-विरोधी चेतना, स्वाधीनता संग्राम में हिस्सेदारी के उत्साह और सांप्रदायिक सद्‌भाव को रेखांकित करते चलते हैं।'

रांगेय राघव अपराजेय सामर्थ्य के रचनाकार हैं। समीक्षकों ने यद्यपि उन्हें प्रगतिशील चेतना का लेखक कहा है तथापि वे सच्चे अर्थों में मानववादी विचारधारा के रचनाकार हैं। इसी भावना से अनुप्राणित होकर उन्होंने अपने रिपोर्ताजों में व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर की समस्याओं का निरूपण किया है। उनकी जीवन दृष्टि युगीन स्थितियों का प्रतिफलन है। उनके रिपोर्ताज युगीन समस्याओं की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हैं।

'तूफानों के बीच' में लेखक की यही जीवन दृष्टि उद्‌घाटित हुई है। मनुष्य को बाँटने वाली धन-लिप्सा की निरंतर चौड़ी होती खाई और परिणामस्वरूप व्यापक नरसंहार - इन सबके बीच लेखक बार-बार स्वयं से प्रश्न करता है - 'कौन-सा है वह उद्देश्य, लक्ष्य या धर्म, जिसके पीछे हम लड़े? कौन-सी है वह नैतिकता जो हमें आज भी परस्पर लड़ने की आज्ञा दे सकती है।... क्यों नहीं समझता मनुष्य अपना स्वार्थ जो सबका स्वार्थ हो?'

अदम्य जीवन में लेखक की यह विचारधारा शब्दशः प्रस्फुटित हुई है। लेखक ने अकाल के प्रश्न पर गहराई से विचार किया है और उसके विभिन्न आयामों - कारण और परिणामों की जीवंत प्रस्तुति की है। 'तूफानों के बीच' में संकलित अन्य रिपोर्ताजों में इन स्थितियों-परिस्थितियों के विश्लेषण के अतिरिक्त एक अन्य दिशा का भी संधान किया है - मानव मूल्यों तथा संबंधों की पड़ताल। लेखक ने इससे पूर्व एक दुनिया देखी थी जिसमें मानवीय मूल्य थे, प्रेम था और तृप्ति थी परंतु बंगाल के इस अकाल में जीवन के वास्तविक रूप को देखकर उसे उन मूल्यों के एक नए रूप का बोध हुआ। उसने प्रेम का सही अर्थ समझा। इस विभीषिका ने उसके प्रेम को मुक्त

किया, 'स्व' से 'सर्व' की ओर उन्मुख किया और उसने प्रेम की सार्थकता को पा लिया - 'चालीस करोड़ को आज़ाद होना पड़ेगा और फिर हमारा-तुम्हारा प्रेम गुलामों का न होकर स्वतंत्र मानव-मानवी का होगा।'

इस प्रकार इस कृति में एक ओर अकाल के प्रश्न पर विचार किया गया है तो दूसरी ओर करूणा एवं बंधुत्व जैसे जीवन मूल्यों की जीवंत प्रस्तुति की गई है। एक ओर अंधविश्वास, एकता का अभाव, शोषकों के अत्याचार और संकुचित स्वार्थ जैसी पतनोन्मुख करने वाली कुरीतियों का रूपांकन है तो दूसरी ओर कृति के भीतर अनुस्यूत मानववादी एव प्रगतिशील विचारधारा उनके दृष्टिकोण की गहराई की परिचायक है। कहा जा सकता है कि रिपोर्ताज हिंदी साहित्य को रांगेय राघव के प्रशंसनीय योगदान का प्रामाणिक दस्तावेज़ है।

25.8 सारांश

इस इकाई में आपने **अदम्य जीवन** शीर्षक रांगेय राघव के रिपोर्ताज के बारे में अध्ययन किया। विधा के रूप में रिपोर्ताज आधुनिक युग की देन है। द्वितीय विश्वयुद्ध के आस-पास इसका उदय एवं विकास हुआ है। रिपोर्ताज एक तथ्यपरक विधा है, जिसके केंद्र में किसी न किसी महत्वपूर्ण घटना का सजीव वर्णन रहता है। यहाँ घटना का संश्लिष्ट रूप होता है जिसमें तथ्य को परिभाषित करता और आकार देता है मानवीय सत्य। इस रूप में, युग सत्य, युग संघर्ष, मनुष्य और उसका समाज, उत्थान-पतन की प्रेरक शक्तियाँ सभी उस घटना के भीतर सन्निहित रहते हैं। रिपोर्ताज में लेखक के दृष्टिकोण की पूर्ति करता है 'लेखक का उत्साह' जिसे आलोचकों ने लेखक की पक्षधरता का पर्याय माना है।

रिपार्ताज तात्कालिक प्रतिक्रिया होते हुए भी कालातीत है। इसका वर्तमान भूत और भविष्य से जुड़ा रहता है। लेखक का दृष्टिकोण ही रिपोर्ताज को चिरस्थायी बनाता है लेकिन वह इतना हावी नहीं होना चाहिए कि मूल कथ्य को ही ढंक ले। रिपोर्ताज में लेखक के दृष्टिकोण की पूर्ति करता है 'लेखक का उत्साह' जिसे आलोचकों ने लेखक की पक्षधरता का पर्याय माना है।

रिपोर्ताज विधा के अंतर्गत शिल्पगत संयम, परिवेश की प्राणवत्ता तथा सजीव भाषा का प्रयोग किसी भी घटना को जीवंत अनुभव में परिवर्तित कर देते हैं। हिंदी साहित्य में रिपोर्ताज का प्रारंभ 1938 में प्रकाशित शिवदानसिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा' से माना जाता है। रिपोर्ताज के प्रारंभिक हस्ताक्षरों में कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का नाम भी उल्लेखनीय है। रिपोर्ताज विधा के विकास में 'हंस' पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। स्वातंत्र्यपूर्व रिपोर्ताज लेखकों में कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, शिवदान सिंह चौहान, रांगेय राघव, प्रकाशचन्द्र गुप्त, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्वातंत्र्योत्तर युग में अमृतराय, रामकुमार वर्मा, लक्ष्मीचंद्र जैन, शिवसागर मिश्र, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, विवेकीराय, मणिमधुकर आदि का सक्रिय योगदान रहा है। जो भी हो अब तक का समय रिपोर्ताज के लिए विकास का दौर है। अभी इस क्षेत्र में बहुत-सी संभावनाएँ बाकी हैं।

रिपार्ताज की परंपरा में 'तूफानों के बीच' एक मील स्तंभ के समान है। संवेदना एवं शिल्प दोनों दृष्टियों से यह रांगेय राघव का सशक्त प्रयास है। 'तूफानों के बीच' 1942 के बंगाल के अकाल का मार्मिक चित्रण है। अकाल की विभीषिका, उसके कारण और अकालजनित समस्याओं का वर्णन करते हुए लेखक ने साम्राज्यवाद ओर पूंजीवाद की दुरभिसंधि का पर्दाफाश किया है। 'तूफानों के बीच' को चिरस्थायी एव अविस्मरणीय कृति बनाने में लेखक की

मानवतावादी दृष्टि का विशेष योगदान है। अकाल के संकट में लेखक साधारण जन की पीड़ा का द्रष्टा भी है और भोक्ता भी।

अदम्य जीवन 'तूफानों के बीच' की मूल संवेदना का वाहक रिपोर्ताज है जिसमें लेखक ने मृत्यु, भूख और महामारी से जूझते व्यक्ति की दारुण दशा का चित्रण किया है। संकट की घड़ी में नैतिक मान्यताओं के स्खलन की ओर भी संकेत किया गया है। चोर-बाजारी-मुनाफ़ाखोरी के रूप में व्यक्ति का संकुचित स्वार्थ किस तरह सब कुछ निगलने को तत्पर था, इसी की जीवंत प्रस्तुति है - **अदम्य जीवन**।

मनुष्य की मनुष्यता में लेखक की आस्था अटूट है। इसीलिए लेखक घोषणा करता है कि 'बंगाल कभी मर नहीं सकता।' परिस्थितियों की प्रतिकूलता में बंगाल के नन्हें बालकों का क्रांति में विश्वास लेखक की मान्यता को पुष्ट करता है।

शिल्प की दृष्टि से, **अदम्य जीवन** में लेखक ने परिवेश का रचनात्मक प्रयोग किया है। चित्रमय भाषा, छोटे-छोटे संवाद, विशिष्ट वाक्य-विन्यास ये सब इस रिपोर्ताज के रचनात्मक गठन के विविध उपकरण हैं। अपने कथ्य एव शिल्प दोनों दृष्टियों से **अदम्य जीवन** हिंदी साहित्य का एक प्रौढ़ रिपोर्ताज है। इसमें अभिव्यक्त लेखक की जीवन-दृष्टि इसे एक अविस्मरणीय रचना बनाती है।

अभ्यास

1. रिपोर्ताज की विशेषताओं के संदर्भ में **अदम्य जीवन** की समीक्षा कीजिए।
2. **अदम्य जीवन** की शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।
3. **अदम्य जीवन** की विषयवस्तु के प्रति लेखकीय दृष्टिकोण का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।